

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय
वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह
ता:-०७/०९/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठः सप्तमः पाठनाम पर्यावरण – विज्ञानम्

पाठ्याशः यज्ञ आहुति – प्रदानेन सह क्रियमाणेन मन्त्रोच्चारणेन
वायुमण्डले प्रसृताभिः स्वरलहरीभ्यः रोगाणां चिकित्सा अपि कर्तुं
पार्यते । यज्ञभस्मना उर्वरशक्त्याः कृषिमात्रायाः गुणवत्तायाश्च संवर्
धनं तु सुविदितमेव संक्षेपे अस्य कथनस्य अयम् आशयः - यदि
वयं पर्यावरणं रक्षयिस्मास्तदा अस्माकं जीवनमपि संरक्षित भवि
ष्यति। यदि पर्यावरणं प्रदूषयिष्यामस्तदा अस्माकम् जीवनमपि
विविधैः रोगैः संकटैश्च आपन्नं भविष्यति ।

शब्दार्थाः-

प्रसृताभिः - फैले हुए से , कर्तुं पार्यते - कर सकते हैं

सुविदितमेव - सही से पता है , आपन्नं - ग्रस्त

अर्थ -

यज्ञ आहुति प्रदान के साथ किए गए मन्त्रोच्चारण से वायु-
मण्डल में फैले हुए स्वरलहरी के द्वारा रोगों की चिकित्सा भी
हो सकती है। यज्ञ के भस्म से उर्वराशक्ति की कृषिमात्रा की
और गुणवत्ता का सम्वर्धन तो विदित ही है । संक्षेप में इस
कथन का आशय यह है – यदि हमलोग पर्यावरण की रक्षा
करेंगे तब हमलोगों जीवन भी सुरक्षित रहेगा । यदि पर्यावरण
को प्रदूषित करेंगे तब हमारा जीवन भी विभिन्न रोगों और
संकटों से घिरा रहेगा ।